

सतयुग की वापसी: समस्याओं की जड़ और समग्र समाधान

विज्ञान, समाज और भाव-सम्वेदना का तार्किक विश्लेषण (अध्याय 1-4)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

अभूतपूर्व प्रगति



जलयान, वायुयान,
संचार साधन



सर्जरी-अङ्ग
प्रत्यारोपण



कल-कारखानों का
पर्वताकार उत्पादन

लेने के देने
क्यों पड़ रहे हैं?

भयंकर दुर्गति



प्रदूषण और
तेजाबी मेघ वर्षण



ध्रुवों का पिघलना



युद्धोन्माद
और कलह

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी उत्कृष्ट साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार)



वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास
करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

बुद्धिवाद का विकास बिना भाव-सम्वेदना के
भयंकर विभीषिकाओं को जन्म देता है।

सीमित भौतिक क्षमता

असीमित मानसिक तृष्णा



असीमित तृष्णा + सीमित संसाधन
= सर्वभक्षी विनाश

शरीर का पेट और पृथ्वी के संसाधन सीमित हैं।
आवश्यकता से अधिक उपभोग उदरशूल (बीमारी)
और प्राकृतिक असन्तुलन लाता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मन की वासना ‘भस्मासुर’ की तरह असीमित है।
यह अनन्त काल तक अतृप्त रहती है।

सामूहिक आत्महत्या

जब चूहों की संख्या बेतहाशा बढ़ती है और संसाधन खत्म होते हैं, तो वे जलाशय में डूब मरने के लिए दौड़ लगाते हैं।

अन्धी सम्पदा और उपभोग की दौड़ में मानव जाति भी इसी 'सर्वभक्षी आत्महत्या' की ओर सरपट दौड़ रही है।

वासना, तृष्णा, और अहंता का अनियंत्रित त्रिदोष।

Author's Note

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के ब्र शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और -सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचो में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मापदंड	प्रकृति/पशु	संवेदनहीन मनुष्य
आवश्यकता	पेट भरने पर शिकार नहीं करते।	कभी तृप्त नहीं होते, अत्यधिक संचय करते हैं।
अतिरिक्त संसाधन	शेष प्रकृति के लिए छोड़ देते हैं।	समुद्र में डुबा देंगे पर दूसरों को नहीं देंगे।
विश्व व्यवस्था	अनजाने में भी पारिस्थितिकी को संतुलित रखते हैं।	बुद्धि के बल पर स्वार्थ सिद्धि हेतु विनाश करते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सूखा सरोवर



भाव-सम्वेदना सूख जाने पर
अन्तराल नीरस और निष्ठुर
चट्टान जैसा हो जाता है।

वसन्त पंचमी १९९० को
ज्ञान शरीर का प्रकाश ज
कहियेगा – सब बच्चों से
क्रान्तिधर्मी साहित्य के र
का प्रयास करें।”



करुणा का जल

सम्वेदना से सेवा और साधना का
मार्ग प्रशस्त होता है। दूसरों का दुःख
अपना लगने लगता है।

वसन्त पंचमी १९९० को
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मों साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य जमुनाश्रम के
यक्षनापत्र

न शरीर ही जिन्दा रहेगा।
चाहिए और आप सबसे
के मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
में जन-जन तक पहुँचाने

मे – “मेरा ज्ञान शरीर ही
चाहिए और आप सबसे
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मों साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य जमुनाश्रम के

लकड़ी चीरना और निरपराध को सताना निष्ठुर व्यक्ति को एक समान लगता है।

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

SYNTHESIS INSIGHT

बुराई हमेशा द्वेष से नहीं जन्मती, बल्कि अक्सर
भावनात्मक शून्यता का परिणाम होती है।



“

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहिरयेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



जीवित लाश

चेतना विहीन शरीर मात्र एक लाश है जो सड़कर वातावरण को प्रदूषित करती है। यह केवल ‘स्व’ तक सीमित है।



सचेतन देवमानव

भाव-सम्बेदना से भरा व्यक्ति देवमानव है। यह विश्व उद्यान का माली है जो सर्वत्र शोभा-सुषमा विनिर्मित करता है।

प्रथम तीन शक्तियाँ बिना
सम्वेदना के अराजकता और
विनाश लाती हैं।
जब चौथी शक्ति (सम्वेदना)
अन्तरात्मा पर उतरती है, तो वह
मनुष्य को 'देवदूत' बना देती है।



निविड़ अन्धकार



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचाना ही चाहिए
मैं जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करूँ।”

एक तीली का साहस



एकला चलो रे
की नीति

आप सबसे कहियेगा — सब वज्रों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे ज्ञातिधर्मों कहियेगा कि
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करे।”
— पूज्य गुरुदेव युगक्ति वेत्तुर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गान्धी परिवार के संस्थापक)

दीपकों की वाहिनी



निष्ठा भरे पुरुषार्थ में
अद्भुत आकर्षण होता है।

जब सारी दुनिया मोह निद्रा में सो रही हो, तब ‘योगी’ को जनसुरक्षा के लिए जागने की हिम्मत जुटानी चाहिए।

अदृश्य सत्ता

परम सत्ता का असाधारण योगदान
(उदाहरण: शिवजी द्वारा गंगा को धारण करना)

दृश्यमान भूमिका

प्रामाणिक प्रतिभाओं का
एकाकी पुरुषार्थ
(उदाहरण: भगीरथ का प्रयास)

कठपुतलियों के दृश्यमान अभिनय के पीछे
बाजीगर की अँगुलियों से बँधे हुए तार ही
प्रधान भूमिका निभाते हैं।

नवसृजन में संलग्न व्यक्तियों की सहायता अदृश्य सत्ता घटनाक्रमों के रूप में अवश्य करती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



६०० करोड़ मनुष्यों का विचार परिष्कार कैसे सम्भव हो?

क्रान्तिधर्मी साहित्य — नवसृजन की दिव्य रूपरेखा।



ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन तक पहुँचाएँ।
स्वयं पढ़ें और लागत मूल्य पर वितरित कर २१वीं सदी के युग-सृजेता बनें।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)